Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ गणगौर का धार्मिक महत्व ॥

॥ जय ईसर-गौरा ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ गण और गौर का अर्थ ॥

शिव और शक्ति की आराधना

“गण” को शिव और “गौर” को गौरी या पार्वती से जोड़ा जाता है। गणगौर में दोनों को ईसर-गौरा रूप में साथ पूजते हैं। यह पर्व दांपत्य में सम्मान, सहयोग और मंगल की प्रार्थना का अवसर है।

विवाहित और अविवाहित श्रद्धालु

प्रचलित परंपरा में विवाहित महिलाएँ परिवार तथा दांपत्य के सुख के लिए और अविवाहित कन्याएँ अच्छे जीवनसाथी की कामना से पूजा करती हैं। प्रार्थना का व्यापक भाव घर में सौहार्द और सभी के कल्याण से भी जुड़ता है।

ऋतु और नई हरियाली

होली के बाद चैत्र के दिनों में यह पर्व मनाया जाता है। मिट्टी की प्रतिमाएँ, फूल, दूब और ज्वारे नई हरियाली तथा जीवन के नवीकरण के संकेत हैं। छोटे पौधों की देखभाल में धैर्य और नियमितता का भाव भी जुड़ता है।

पूजा की अवधि कहीं लगभग सोलह तो कहीं अठारह दिन मानी जाती है। मुख्य उत्सव चैत्र शुक्ल तृतीया को होता है; अपने क्षेत्र के पंचांग और घर की रीति देखें।

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ लोकपरंपरा और सामूहिक उत्सव ॥

गीत, मेहंदी और सिंजारा

गणगौर में समूह बनाकर गीत गाना, मेहंदी लगाना और गौरा का श्रृंगार करना प्रचलित है। सिंजारा में मायके से बेटी के लिए वस्त्र या उपहार भेजने की रीति कई घरों में दिखती है। यह परिवार के रिश्तों और यादों को नया अवसर देती है।

विदाई और सवारी

तृतीया के उत्सव में सजी ईसर-गौरा प्रतिमाओं की सवारी और गौरा की प्रतीकात्मक विदाई होती है। राजस्थान के नगरों में सार्वजनिक जुलूस भी निकलते हैं। लोकगीतों में गौरा के पीहर और ससुराल के भाव को जगह मिलती है।

पूजा का सार

पर्व घर की परंपरा, शिल्प, संगीत और सामूहिक सहभागिता को साथ लाता है। सामग्री कम हो तो चित्र, जल, फूल और दीप से सरल पूजा करें। उपवास स्वास्थ्य के अनुसार रखें; समृद्धि या विवाह के किसी परिणाम की गारंटी न मानें।

उत्सव के बाद फूल और मिट्टी का जिम्मेदारी से निपटान करें। बच्चों को गीत, प्रतिमाओं और ज्वारों का अर्थ बताना परंपरा को समझने का अच्छा तरीका है।

॥ जय माँ गौरी ॥